

विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ

दिनांक -20-05-2020

विषय -हिन्दी

शिक्षक -पंकज सर

सुप्रभात बच्चों आज हम नवीन किताब के माध्यम से पढ़ा रहा हूँ मुझे उम्मीद है किताब आप सभी खरीद लिए होंगे, और ध्यान लगाकर पढ़ाई करेंगे।

जीवन परिचय

## द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

परिचय

जन्म: 01 दिसम्बर 1916

निधन: 29 अगस्त 1998

जन्म स्थान

ग्राम रोहता, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

### कुछ प्रमुख कृतियाँ

क्रौंचवध, सत्य की जीत (खंडकाव्य), दीपक, गीतगंगा, **बाल काव्य कृतियाँ** : वीर तुम बढे चलो, हम सब सुमन एक उपवन के, सोने की कुल्हाड़ी, कातो और गाओ, सूरज सा चमकूँ मैं, माखन मिश्री, हाथी घोड़ा पालकी, अंजन खंजन, सीढ़ी सीढ़ी चढ़ते हैं, हम हैं सूरज, चाँद सितारे, हाथी आता झूम के, बालगीतायन, चाँदी की डोरी, ना मोती ना मुसकान, बाल गीतायन, द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी रचनावली

अन्य

टेकस्ट बुक: प्लानिंग एंड प्रिपेरेशन, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा बाल साहित्य भारती पुरस्कार से सम्मानित , उनका जन्म आगरा के रोहता में हुआ था

शिक्षा और कविता को समर्पित द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का जीवन बहुत ही चित्ताकर्षक और रोचक है। उनकी कविता का प्रभाव सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार कृष्ण विनायक फड़के ने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में प्रकट किया कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी शवयात्रा में माहेश्वरी जी का बालगीत 'हम सब सुमन एक उपवन के' गाया जाए। फड़के जी का मानना था कि अंतिम समय भी पारस्परिक एकता का संदेश दिया जाना चाहिए। उत्तर प्रदेश सूचना विभाग ने अपनी होर्डिंगों में प्रायः सभी जिलों में यह गीत प्रचारित किया और उर्दू में भी एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसका शीर्षक था, 'हम सब फूल एक

गुलशन के', लेकिन वह दृश्य सर्वथा अभिनव और अपूर्व था जिसमें एक शवयात्रा ऐसी निकली जिसमें बच्चे मधुर धुन से गाते हुए चल रहे थे, 'हम सब सुमन एक उपवन के'। किसी गीत को इतना बड़ा सम्मान, माहेश्वरी जी की बालभावना के प्रति आदर भाव ही था।

बच्चों के कवि सम्मेलन का प्रारंभ और प्रवर्तन करने वालों के रूप में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का योगदान अविस्मरणीय है। वह उप्र के शिक्षा सचिव थे। उन्होंने शिक्षा के व्यापक प्रसार और स्तर के उन्नयन के लिए अनथक प्रयास किए।